By. Dr. Shailesh Kumar
Dept. of Economics
[illegible] Singh College [illegible]

12.7.20

B.A. Part
Labour [illegible]

पूँजी लाभ कर एवं इसमें आरोपित किया जाने वाला तथ्य :

पूँजी लाभ आय का ही एक प्रकार है। यह आय अनियमित तथा अनर्जित होता है तथा इसका उद्गम परिसंपत्तियों के मूल्य की कीमतों में वृद्धि के कारण होता है परन्तु इस वृद्धि की वास्तविक प्राप्ति विचाराधीन परिसम्पत्तियों को बेचने पर ही हो सकती है अर्थात पूँजी लाभ के कालावधि का प्रसार एक से अधिक वर्षों तक व्याप्त हो सकता है परन्तु करदाता इस ~~का प्रसार एक~~ वर्षों परिसम्पत्तियों को बेचे बिना वृद्धि का लाभ नहीं उठा सकता। इस प्रकार पूँजी लाभ की दो विशेषताएँ हैं।

(1) गुच्छीकरण (Bunching) अर्थात इसकी वास्तविक प्राप्ति का किसी विशेष काल बिन्दु पर केन्द्रित होना तथा

(2) इसकी उत्पत्ति का एक से अधिक कई वर्षों की कालावधि पर फैलाव।

चूंकि आय कर प्रणाली में करदाता की कर देयता उसकी 'वार्षिक आय' के आधार पर तय की जाती है अतः एक मूल समस्या यह उठती है कि पूँजी लाभ पर कब और किस दर से करारोपण किया जाए। इसे प्राप्ति के वर्ष की आय में जोड़ने से करदाता पर प्रगामी दरों के कारण अत्यधिक बोझ पड़ता है। और यदि इसे स्वामित्व की कालावधि पर फैला दिया जाए तो इसकी प्राप्ति से पहले ही इस पर कर देयता का दायित्व बन जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी संभव है कि किसी परिसम्पत्ति कीमत कुछ समय तक के लिए बढ़ने के पश्चात फिर गिर जाए। वैसे सामान्यतः पूँजी लाभ पर करारोपण अधिकतर

P.T.O.

देशों में लाभ प्राप्ति के पश्चात ही किया जाता है तथा इसकी दरें प्रगामी परन्तु मुख्य आयकर की तुलना में कुछ कम रखी जाती है।

पूँजी लाभकर की अनुमान विधि की कई त्रुटियाँ हैं और इसमें कई तथ्यों की उपेक्षा किया गया है।

(1) विचाराधीन परिसम्पत्ति पर रख रखाव आदि के व्यय।

(2) अनारोपित परिसम्पत्ति को वैकल्पिक रूप आकारों में रखने से संभावित आय।

(3) विचाराधीन परिसम्पत्ति में कीमत वृद्धि के साथ-साथ अन्य कीमतों में भी वृद्धि होने के कारण इसकी क्रय शक्ति का न बढ़ना, कम बढ़ना, अथवा घट जाना।

(4) दीर्घकालिन बचत, निवेश और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव की प्रबल संभावना।

(5) औचित्य पूँजी लाभ कर के औचित्य की स्थापना हेतु भी कई तर्क दिए जाते हैं।

पूँजी लाभ की उत्पत्ति में पूँजी के स्वामी की कोई भूमिका नहीं होती। इसका श्रेय बाजार और आर्थिक विकास की शक्तियों को जाता है। अतः पूँजी लाभ से सम्बन्धित होने का अधिकार पूँजी के स्वामी को नहीं, पूरे समाज को होना चाहिए।

(6) पूँजी लाभकर वितरणीय असमानताएँ कम करने में सहायक होता है।

(7) कुछ कर दाता पूँजी लाभकर के अभाव में कई सामान्य क्रय-विक्रय की गतिविधियों से होने वाली आय को भी पूँजी लाभ का रूप देने का प्रयत्न करते हैं, जिससे आयकर की चोरी प्रोत्साहित होती है।

(8) उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि पूँजी लाभकर की त्रुटियाँ इसके अपेक्षित हितों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। इससे विकास प्रक्रिया को क्षति पहुँचती है।